दिनांक 05-12-1974 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

अव्यक्त रूपधारी बनकर बाप से मिलन मनाओ
व्यक्त देश और व्यक्त देह का आकर्षण मिटाओ

अव्यक्त निराकारी अवस्था में स्थित होते जाओ
एक बाप से सुनने बोलने का वादा पूरा निभाओ

व्यक्त वस्तु और व्यक्ति के प्रति भावना मिटाओ
इसी प्रकार बाप समान बनने का वादा निभाओ

अपनी साईलेंस की शक्ति को इतना तुम बढ़ाओ
साइंस की शक्ति समान अपना प्रमाण दिखाओ

समय व्यर्थ गंवाने की तुम आदत जब मिटाओगे
व्यर्थ पर पूरा ध्यान देकर काल पर विजय पाओ

आवाज में आकर फिर आवाज से परे हो जाना
कर्मयोगी बनकर रूहानियत में स्थित हो जाना

कर्मेन्द्रियों से न्यारे कमल पुष्प समान बन जाना
इसी तरह कर्मातीत अवस्था के नजदीक आना

हर प्रकार की हलचल में खुद को अचल बनाना
बाप समान बनने का पुरुषार्थ तीव्र करते जाना

व्यर्थ और अलबेले संकल्पों को जड़ से मिटाना
समर्थ संकल्पों के द्वारा सूर्यवंशी प्रालब्ध पाना